वासुदेवशरण अग्रवाल साहित्यिक परिचय 12th

लेखक : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—7 अगस्त, 1904 ई०।
- **जन्म-स्थान**—मेरठ (उ० प्र०)।
- **उपाधि**—पी-एच० डी०, डी० लिट्०।
- **भाषा :** विषयानुकूल, प्रौढ़ और परिमार्जित खड़ी बोली।
- **शैली :** विचारात्मक, गवेषणात्मक, व्याख्यात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—पृथिवीपुत्र, भारत की एकता, कल्पवृक्ष, माताभूमि, वाग्धारा।
- **मृत्यु**—27 जुलाई 1967 ई०।
- **साहित्य में स्थान :** निबन्धकार, टीकाकार और साहित्यिक ग्रंथों के कुशल संपादक के रूप में ख्याति।

जीवन परिचय:-

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का जन्म सन् 1904 ई० में मेरठ जनपद के खेड़ा ग्राम में हुआ था। इनके पिता और माता लखनऊ में रहते थे। अतः उनका बाल्यकाल लखनऊ में ही व्यतीत हुआ। यहीं से इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा भी प्राप्त की। इन्होंने 'काशी हिन्दू विश्वविद्यालय' से एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। 'लखनऊ विश्वविद्यालय' ने 'पाणिनिकालीन भारत' शोध - प्रबन्ध पर इनको पी० - एच० डी० की उपाधि से विभूषित किया। यहीं से इन्होंने डी० लिट्० की उपाधि भी प्राप्त की। इन्होंने पॉलि, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति और पुरातत्व का गहन अध्ययन किया और इन क्षेत्रों में उच्चकोटि के विद्वान् माने जाने लगे।

http://www.gyansindhuclasses.com

साहित्यिक परिचय :-

डॉ० अग्रवाल लखनऊ और मथुरा के पुरातत्व संग्रहालयों में निरीक्षण केंद्रीय पुरातत्व विभाग की संचालक और राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली के अध्यक्ष रहे। कुछ काल तक वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में इण्डोलॉजी विभाग के अध्यक्ष भी रहे। डॉ० अग्रवाल ने मुख्य रूप से पुरातत्व को ही अपना विषय बनाया उन्होंने प्रागैतिहासिक वैदिक तथा पौराणिक साहित्य के मर्म का उद्घाटन किया और अपनी रचनाओं में संस्कृति और प्राचीन भारतीय इतिहास का प्रामाणिक रूप प्रस्तुत किया। वे अनुसंधाता, निबन्धकार, सम्पादक के रूप में भी प्रतिष्ठित रहे।

निबन्ध संग्रह :-

(1) पृथिवीपुत्र
(2) कला और संस्कृति
(3) कल्पवृक्ष
(4) भारत की मौलिक एकता
(5) माता भूमि
(6) वाग्धारा आदि।

शोध :-

पाणिनिकालीन भारत।

http://www.gyansindhuclasses.com

सम्पादन :-

(1) जायसीकृत पद्मावत की संजीवनी व्याख्या,
(2) बाणभट्ट के हर्षचरित का सांस्कृतिक अध्ययन।

इसके अतिरिक्त इन्होंने पॉलि, प्राकृत और संस्कृत के अनेक ग्रंथो का भी सम्पादन किया।

भाषा - शैली :-

अग्रवाल की भाषा शुद्ध और परिष्कृत खड़ीबोली हैं, जिसमें व्यावहारिकता, सुबोधता और स्पष्टता सर्वत्र विद्यमान हैं।

शैली के रूप में इन्होंने गवेषणात्मक, व्याख्यात्मक एवं उद्धरण शैलियों का प्रयोग प्रमुखता से किया हैं।

http://www.gyansindhuclasses.com